द्विवेदी युग

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में आधुनिक काल के द्वितीय उत्थान को 'द्विवेदी युग' कहा है। द्विवेदी युग का समय 1903-1925 ई० तक स्वीकार किया गया है। द्विवेदी जी एक महान युगप्रवर्तक थे। आधुनिक हिन्दी-साहित्य में द्विवेदी जी का व्यक्तित्व अत्यधिक प्रभावशाली माना जाता है। इन्होंने केवल 'सरस्वती' का संपादन ही नहीं किया, अपितु समय के समस्त साहित्य का संपादन भी किया। आधुनिक हिन्दी-साहित्य की चार विशेषताओं का पूर्ण संस्थापन द्विवेदी युग में संपन्न होता है।

1. खड़ी बोली की पूर्ण प्रतिष्ठा
2. गद्य शैली का परिमार्जन
3. जनोपयोगी साहित्य का सर्जन
4. भाषा का परिष्करण
5.

द्विवेदी युगीन ~~कवि~~:- लेखक :-

पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं० गोविन्द नारायण मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, पं० रामावतार शर्मा, माधव प्रसाद मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, पं० चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', मिश्रबन्धु, श्यामसुन्दर दास।

कवि :- पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, कामता प्रसाद गुरु, रामचरित उपाध्याय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, सियारामशरण गुप्त, रूपनारायण पाण्डेय, मुकुटधर पांडेय, लक्ष्मीधर वाजपेयी, गोपाल शरण सिंह, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रायदेवी प्रसाद 'पूर्ण', नाथूराम शर्मा 'शंकर' आदि।

काव्य प्रवृत्तियाँ :- 1. देशभक्ति, 2. मानवतावादी विचारधारा, 3. बुद्धिवाद का प्राधान्य,
4. अश्लील शृंगार का परित्याग
5. इतिवृत्तात्मकता एवं गद्यात्मकता
6. स्वच्छंद प्रकृति-चित्रण
7. अनुवाद की प्रवृत्ति

Scanned with Cam

8 नवीन एवं साधारण विषयों का चयन.
9. भाषा का परिवर्तन
10. ईंटों का स्वच्छंद प्रयोग
11. इतिवृत्तात्मकता, 12. सामाजिक समस्याओं का चिंतन

द्विवेदीयुगीन कवि और लेखक :-

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी :- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म दौलतपुर (जिला - रायबरेली) में 1870 ई० में और देहावसान 1929 ई० में हुआ।

भारतेन्दु ने हिन्दी गद्य के जिस रूप का प्रवर्तन किया, आचार्य द्विवेदी ने उस रूप को परिमार्जित करने में अपना योगदान दिया।

"साहित्यरूपी उपवन में भारतेन्दु द्वारा जो नवीन पौधे लगाए गए थे, उनको द्विवेदी ने काँट-छाँट कर विशेष आकार - प्रकार प्रदान किया और अपने जीवन से उन्हें सींचा, जिसके फलस्वरूप आज वह नाना वर्ण सुगन्धित कुसुमों से शोभायमान हो रहा है।"

इन्होंने 'सरस्वती' का संपादन सन् 1903-1920 तक किया। इस पत्रिका द्वारा हिंदी भाषा तथा व्याकरण से संबंधित त्रुटियां दूर की। गद्य लेखकों के लिए इन्होंने मार्गप्रदर्शक का ही काम नहीं किया, अपितु इनका मार्ग भी प्रशस्त किया। भारतेन्दु की तरह इन्होंने भी अपना मंडल बनाया जो द्विवेदी मंडल कहलाया।

रचनाएँ :- द्विवेदी की रचनाएँ पचास के लगभग हैं। साहित्य, पुरातत्व, आलोचना, विज्ञान, नीति आदि विषयों पर इनके लेख प्रकाशित हैं। 'विचार विमर्श' नामक ग्रंथ में इनके लेख संगृहीत हैं।

Scanned with Cam

नैषधचरित चर्चा, नाट्यशास्त्र, रसज्ञरंजन, सुकविकीर्तन, प्राचीन पंडित एवं कवि, विचार - विमर्श आदि इनकी मौलिक रचनाएँ हैं।

काव्यों में - देवस्तुतिशतक, नागरी काव्यमंजूषा, कविता - कलाप, कान्यकुब्जलीलावृतम्, संपादकस्य आदि।

गद्य रचनाएँ :-

1. भामिनी विलास
2. अमृत लहरी
3. बेकन - विचार रत्नावली
4. शिक्षा
5. स्वाधीनता
6. जल चिकित्सा
7. हिन्दी महाभारत
8. रघुवंश
9. वेणी संहार
10. कुमार संभव
11. मेघदूत
12. किरातार्जुनीय
13. प्राचीन पंडित और कवि
14. आख्यायिका सप्तक

मौलिक :-

1. तरुणोपदेश, हिन्दी शिक्षावली तृतीय भाग की समालोचना, नैषध चरित चर्चा, हिन्दी कालिदास की समालोचना, वैज्ञानिक कोश, नाट्य शास्त्र, विक्रमांक देव चरित चर्चा, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, सम्पत्ति शास्त्र, कौटिल्य - कुठार, कालिदास।

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार - "जो कार्य द्विवेदीजी ने किया, वह अनुवाद का हो, काव्य-रचना का हो, आलोचना का हो अथवा भाषा - संस्कार का हो या केवल साहित्य प्रतिनिधित्व का ही हो, स्थायी महत्व का हो या अस्थाई, हिन्दी के युगविशेष के प्रवर्तन एवं निर्माण में सहायक हुआ है इसका ऐतिहासिक महत्व है उसी के आधार पर नवीन युग का साहित्य - प्रासाद खड़ा किया जा सकता है। उनकी समस्त कृतियाँ युग का प्रतिनिधि होने का गौरव रखती हैं।"